चोटी बेहन मुख्ता

आज मै २२ साल का हू, लेकिन मैने जवानी का खेल खेलना बहुत पेहले से ही शुरू कर
दिया था और ये खेल मैने अपनी प्यारी चोटी बेहन 'मुख्ता' के साथ खेला था. येह तब की
बात है जब मै जवानी मे खदम रख रहा था. मेरे घर मे पापा, मम्मी, मुख्ता, शिल्पी और मै
रेहते थे. शिल्पी एक साल की है और मुख्ता मुझ्से डेड साल चोटी थी. बचपन से ही मेरी
बेहन मुख्ता से मुझे बहुत प्यार था और वो भी मुझसे खेलना बहुत पसन्द करती थी.
हमारी गरमियों की चुट्ठिया चल रहे थे. पापा तो सुबेह ही काम पर चले जाते और शाम
को घर आते थे और मम्मी सारा दिन काम मे बिसी रेहती थी. एक दिन दुफेर के वक्त खना
खा के मै और मुख्ता टी.वी देख रहे थे. मम्मी और शिल्पी सो रहे थे. इतने मे बिजली
चली गयी. अब मै और मुख्ता बोर हो रहे थे.
"भैया, लैट तो चली गयी, अब क्या करे?"
"कुच खेलते है"
"क्या"
"लूडो"
"मेरा दिल नही कर रहा"
"साम्प सिडी"
"नही"
"घर घर"
"उम्म्म...ठीक है"
"पर यहा तो बहुत गरमी है, चल ऊपर वाले कमरे मे चल के खेलते है"
हमरा घर दो–मजले की है. मै और मुख्ता ऊपर फ़्लोर वाले रूम मे चले गये
"भैया मम्मी ने अगर हमे इन अवाज़ लगायी तो सुनयी नही देगी यहा पर"
"मम्मी तो अभी कम से कम २ घन्टे सोती रहेगी और शिल्पि तो पूरे दिन सोती रेहती है"
"पर हम घर घर मे खेलेन्गे क्या?"

"उम्म्म्म.. मै डाक्टर हू और तुम पेशन्ट. तुम मेरे पास दिखाने आओगी"
खेल शुरु....
"नेक्स्ट"
"हेल्लो डाक्टर साब, मेर नाम मधु है"
"हेल्लो...हा..मधु जी..क्या प्रोब्लेम है आपको"
"डाक्टर साब मेरे पेत मे अक्सर दर्द रेहता है"
"आप सामने बेन्च पर लेट जाइये"
मुख्ता जाकर बेड पर लेट गयी. मुख्ता ने उस दिन ग्रीन चोलोर क सलवार–कमीज़ पेहना
हुआ था. फिर मै भी बेड की सैड पर जाकर बैठ गया
"हान... मधु जी... पेट मे किस जगय दर्द होता है आपको"
मुख्ता ने अपनी नाभी पर हाथ रख कर बताया "डाक्टर..इस जगय होता है दर्द"
"आप ज़रा अपनी कमीज़ थोडी ऊपर करेन्गी"
मुख्ता मेरे से पूची "असली मे क्या भैया??"
"हान"
मुख्ता ने अपनी कमीज़ ऊपर कर दी. फिर मैने मुख्ता के पेट पर हाथ मारना शुरू किया.
मुख्ता थोडा सा शरमा रही थी
"क्या दर्द हमेशा यही होता है?"
"जी डाक्टर"
"अब मै आपके पेत को दबऊन्गा, जहा दर्द हो वहा बताना"
मै मुख्ता के पेट को अपने हाथों से दबाने लगा. इस पर मेरा लौडा खडा होने लगा. मेरी
नज़र मुख्ता की जवानी पर पडने लगी. मुख्ता की शरीर बहुत चिकनी और मुलायम थी. मुख्ता को भी मेरा दबाना अच्छा लग रहा था. मै कुछ देर तक तो पेट को दबाता रहा लेकिन अब मै मुख्ता का एक एक अन्ग दबाना चहता था.
"ये दर्द कब कब होता है आपको"
"रोज़ सुबे उठते ही.. और कभी कभी तो चेस्ट मे भी होता है.. दर्द"
"चेस्ट मेइन?...चेस्ट मे किस जगय?"
"बिल्कुल बीच मे"
"देखना पडेगा. कमीज़ थोडा और ऊपर कीजिये"

मुख्ता को मज़ा आ रहा था और वो इस खेल और खेलना चहती थी. मेरा तो लौडा बेकाबु
सा होता जा रहा था. मुख्ता को मज़ा तो आ रहा था पर वो शरमा रही थी
"भैया कमीज़ और ऊपर मत करो,"
"पर मुख्ता हम तो खेल ही रहे है. कौन्सा असली मे कर रहे है"
"डाक्टर साब.. कमीज़ ऊपर मत कीजिये, मैने पेहनी नही"
"क्य नही पेहनी"
"म्म.. ब्रा"
"पर क्यों नहि पेहनी"
"मुझे उन्डर गार्मेन्ट्स मे फ्री फ़ील नही होता. आप कमीज़ और ऊपर मत कीजिये, कमीज़
के अन्दर हाथ डाल के देख लीजिये"
"ठीक है"
मैने मुख्ता की कमीज़ मे हाथ डाला और पूचा
"कहा दर्द होता है"
"दोनों के बीच मे"
"क्य? दोनो ब्रेस्ट के बीच मे?"
"हा"
मै मुख्ता के मम्मे के बीच के जगह को दबाने लगा लेकिन मै तो मुख्ता के मम्मे को दबाना चहता था
"बस बीच मे ही दर्द होता है क्या?"
"नही डाक्टर कभी कभी तो पूरे चेस्ट मे होता है"
मुख्ता के इतने केहने की देर थी की मैने अपने दोनों हाथ उसके मम्मे पर रख दिया. फिर
मैने पूचा
"क्या कभी कभी ब्रेस्ट मे भी दर्द होता है?"
"दर्द तो नही डाक्टर साब. लेकिन भरीपन फ़ील होता है. ब्रेस्ट कुच भरी–भरी से रेहते है"
"देखिये, मै सही इलाज तभी कर सकता हू जब आप मुझे अपनी पूरी चेस्ट का परीक्शा
करने दे, और इसके लिये आपको अप्नी कमीज़ उतारनी होगी"

"भैया, देख के आओ के मम्मी और शिल्पि सो रहे है ना" मुख्ता को इस खेल मे मज़ा तो
आ रहा था लेकिन वो डर भी रही थी
"मै अभी देख के आता हू"
मै नीचे मम्मी और शिल्पी को देखने गया, दोनो ही सो रहे थे और लैट भी आ गयी थी,
सो गरमी से दोनों के जागने का कोई डर नही था
"मै देख के आ गया, दोनो सो रहे है, और बिजली भी आ गयी है, मै ए.सि. चालू कर देता हू"
"नही भैया ए.सि की ज़रूरत नही, ऐसे ही ठीक है"
"हा तो शुरू करे खेलना?"
"हान"
"हा, तो आपको अपनी कमीज़ उतारनी ही पडेगी मधु जी"
"ठीक है डाक्टर साब अगर इसके बिना आप इलाज नही कर सकते हो तो उतार ही देती
हू"
मुख्ता ने अपनी कमीज़ उतार दी. उसने कमीज़ के अन्दर कुच भी नही पेहना था. अब वो
मेरे सामने सर से लेकर कमर तक बिल्कुल नन्गी थी
"तो आपको चेस्ट मे भरीपन मेहसूस होता है?"
"जी डाक्टर. अब आप मेरी चेस्त पर हाथ लगा कर परीक्शा कीजिये ना..."
मैने मुख्ता के दोनो मम्मे को पकडा और दबाना शुरू किया. उसके मूह से आअह्ह्ह निकल गयी. ओ बोली
"डाक्टर..आपके दबाने से मेरे मम्मों को कफ़ी आराम मिल रहा है..अह्ह्ह्ह्ह?"
"आपके मम्मों का भारीपन मै अभी खतम कर सकता हू"
"कैसे?"
"आपकी मम्मेओं को चूस के"
"क्या..इस्स..से भारीपन खतम हो जायेगा? आर यु शूर?"
"हान"
"तो फिर चूस लीजिये. मै ठीक होने के लिये कुछ भी कर सकती हू.. कुछ भी..बस कुछ
भी"

मैने मुख्ता का लेफ़्त निपल अपने मूह मे लेकर चूसने लगा
"अह्ह्ह्ह्ह.....डाक्टर.....ऊस्स्स्स्स्स्स.....कितना आराम मिल रहा है. दूसरे चूची मे भी
भारीपन है.. उसे भी चूसिये ना.आ..आ."
मै एक हाथ से मुख्ता का बायी चूची दबा रहा था और दायी चूची मेरे मूह मे था
"ऊस्स्स्स्स.... उउह्ह्ह्ह्ह्ह्ह... डाक्टर साब.... आप तो मेरा दूध पी रहे है"
"दूध की वजह से ही भारीपन है... दूध खतम तो भारीपन खतम"
फिर मै १० मिनुट तक उसके मम्मे ही चूसता रहा और वो मज़ा मे आहेन भरती रही. अब
वो पूरी मस्ती मे थी. मै उसके मम्मे चूस रहा था और उसने मुझे अपनी बाहों मे कस लिया . मैने मम्मे से मूह हटा के उसके होन्ठों पर रखा तो उसने अपनी जीभ मेरे मूह मे
डाल दी और हम एक दूसरे की जीभ चाटने लगे. फिर मै बोला
"बस मै आपको एक इन्जेक्शन भी लगा देता हू.. उस से आपको पूरा आराम मिल जायेगा"
"डाक्टर साब... इन्जेक्शन कहा लगाएन्गे.. हिप्स पे?"
"हान तुम्हारे चुतडों पे.. अब आप ज़रा अपनी सलवार खोल दीजिये"
म्मुख्ता ने बिना कुछ कहे अपनी सलवार खोल दी और पेट के बल लेट गयी. मैने उसकी
सलवार उतार के उसकी घुतनों तक कर दी और अपने हाथों से उसकी गान्ड, चूतड दबाने
लगा
"डाक्टर साब. मै बताना भूल गयी थी के मेरे झन्घों के बीच मे चुभन सी मेह्सूस होती
है"
"झन्घों के बीच मे.. और कहा कहा होती है?... जैसे की.. चूतडों के बीच मे?"
"हान... हिप्स के बीच मे भी चुभन लगती है"
"तोह आप सीधी लेट जाइये और अपनी टान्गे चौडा कर लीजिये"
म्मुख्ता अपनी लेग्स खोल के लेट गयी. मैने पेहली बार अपनी बेहन की चूत देखी और
देख ते ही म्मुख्ता की चूत को चूसने लगा

"ऊऊ.... ऊऊ..... उउउउउउउउ.. स्स्स्स्स्स्स.. ह्ह्ह्ह्ह्ह... भैया..आ..आ..आ म्मम्मी जाग
तोह नही जयेगी?"
"म्मम्मी अभी एक घन्टे से पेहले नही जागेन्गी"
मैने अपनी कमीज़ निकाल दी. मुख्ता पूरी मस्ती मे थी. अब वो इस खेल को लेके सीरिअस हो गयी थी
"ऊऊ.... ह्ह्ह्ह्ह्ह..... भैया.... ऊ..ऊ बहुत मज़ा..आ..आ..आ..आ आ रहा..आआ.. है"
"म्मुख्ता... तू तो कमाल कि चीज़ है. तेरी मम्मे और गान्ड ने तोह मुझे पागल कर दिया है.. और तेरी चूत तो बहुत मीठी है रे..ए..ए..ए.ए."
"ऊह्ह्ह्ह्ह..सच मुच भैया??.. मेरे प्यारे बैय्या.. आप की बोडी कुच कम नही है.. आपकी
मसुल्स तो कमाल है ..आप्की मज़बूत चेस्ट मेरे मम्मों को दबाये तो कितना अच्छा लगेगा"
फिर मैने अपनी पेन्ट भी निकाल दी. अब हम दोनो भाई–बेहन बिल्कुल नन्गे थे
"ऊह्ह्ह्ह्ह्ह.. भैया..आ..आ..आ.. आप कितना अच्छा चाटते हो.ऊ..ऊ..ऊ
आआआह्ह्ह..ह्ह्ह..ह्ह.. भैया..आ..आ..आ.. अह्ह्ह. मेरा पिशाब निकलने वला है.
ऊह्ह...अपनी पूरी जीभ मेरी चूत के अन्दर कर दो.... आआह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह"
मैने चाटना बहुत तेज़ कर दिया और जैसे ही वो झडी तो उसका पूर चूत क रस पी गया.
"अह्ह्ह.. भैया..आ..आ मज़ा आ गया..आ..आ..आ"
––खेल खतम––